GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying)और डिजिटल सहानुभूति के संकट में डॉ. कलाम के 'मूल्य-आधारित शांति शिक्षा' दृष्टिकोण की प्रासंगिकता

NIMRA
Research Scholar
शिक्षाशास्त्र विभाग,दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर,U.P.,Email-Thenimra123@Gmail.Com

शोध सार (Abstract)

इक्कीसवीं सदी के अति-संयोजित (Hyper-connected) युग में, जहाँ शिक्षा और सामाजिक संवाद पूर्णतः आभासी (Virtual) हो चुके हैं, 'डिजिटल सहानुभूति' (Digital Empathy) का अभाव एक गंभीर वैश्विक संकट बन चुका है। इंटरनेट की गुमनामी (Anonymity) और पर्दे (Screen) की आड़ में किए जाने वाले दुस्साहस ने युवाओं में आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying), तकनीकी-तनाव (Techno-stress) और 'नैतिक विघटन' (Moral Disengagement) को जन्म दिया है। प्रस्तुत विश्लेषणात्मक शोध पत्र द्वितीयक गुणात्मक आंकड़ों (Secondary Qualitative Data) और दार्शनिक प्रविधि (Philosophical Methodology) का उपयोग करते हुए इस तथ्य का अन्वेषण (Exploration) करता है कि वर्तमान दंडात्मक नीतियां (Punitive Policies) और साइबर कानून (Cyber Laws) इस मनोवैज्ञानिक संकट के निवारण में क्यों अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि तकनीकी समस्याओं का स्थायी समाधान केवल तकनीकी दृष्टिकोण से संभव नहीं है; इसके लिए एक मानवीय दृष्टिकोण (Humanistic Approach) की नितांत आवश्यकता है। इस संदर्भ में, यह शोध पत्र डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के 'तकनीकी-मानवतावादी' (Techno-humanism) विजन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के 'मूल्य-आधारित शिक्षा' (Value-based Education) के सिद्धांतों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि डिजिटल नागरिकता (Digital Citizenship) और 'शांति शिक्षा' (Peace Education) को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाकर ही मेटावर्स (Metaverse) और सोशल मीडिया (Social Media) के वर्तमान दौर में छात्रों को एक सुरक्षित और संवेदनशील आभासी वातावरण प्रदान किया जा सकता है।

मुख्य शब्द (Keywords): आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying), डिजिटल सहानुभूति (Digital Empathy), मूल्य-आधारित शिक्षा (Value-based Education), शांति शिक्षा (Peace Education), नैतिक विघटन (Moral Disengagement), डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

प्रस्तावना (Introduction)

वर्तमान डिजिटल क्रांति ने विश्व को एक 'वैश्विक ग्राम' (Global Village) में परिवर्तित कर दिया है, परंतु विडंबना यह है कि इस संयोजकता (Connectivity) ने मानवीय संवेदनाओं के मध्य की दूरियों को विस्तृत कर दिया है। आज के जेन-जेड (Gen Z) और जेन-अल्फा (Gen Alpha) 'डिजिटल नेटिव्स' (Digital Natives) हैं, जिनका अधिकांश सामाजिक और शैक्षणिक जीवन आभासी दुनिया (Virtual World) में व्यतीत होता है। अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU, 2023) के अनुसार, विश्व की लगभग 67% आबादी ऑनलाइन है, जिसमें युवाओं का अनुपात सर्वाधिक है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शब्दों में: "शिक्षा का मुख्य उद्देश्य कौशल और विशेषज्ञता के साथ-साथ उत्तम मनुष्यों का निर्माण करना है। प्रबुद्ध शिक्षक ही ज्ञान और नैतिक मूल्य दोनों प्रदान कर सकते हैं।" (Ignited Minds, 2002)तकनीक ने जहां ज्ञान के लोकतंत्रीकरण (Democratization of Knowledge) में अभूतपूर्व योगदान दिया है, वहीं इसने एक ऐसे नकारात्मक एवं चिंताजनक पहलू को भी जन्म दिया है जिसे 'आभासी उत्पीड़न' (Cyberbullying) कहा जाता है। स्क्रीन के पीछे बैठकर किसी अन्य व्यक्ति पर मनोवैज्ञानिक प्रहार करना आज की युवा पीढ़ी के लिए एक 'सामान्यीकृत व्यवहार' (Normalized Behavior) बनता जा रहा है। इसका मूल कारण 'डिजिटल सहानुभूति' (Digital Empathy) अर्थात आभासी दुनिया में दूसरे व्यक्ति की पीड़ा को महसूस करने की क्षमता का नगण्य होना है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक 'इग्नाइटेड माइंड्स' (Ignited Minds) में चेतावनी दी थी कि तकनीक यदि मानवीय मूल्यों से विहीन हो जाए, तो वह समाज के लिए एक विध्वंसक अस्त्र बन सकती है। यह शोध पत्र इसी संदर्भ में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के समक्ष उपस्थित इस नैतिक चुनौती का मूल्यांकन करता है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

इस विषय पर पूर्व में किए गए अध्ययनों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) एक वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुका है:

- वैश्विक परिदृश्य: UNESCO (2020) का प्रतिवेदन "Behind the numbers: Ending school violence and bullying" स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वैश्विक स्तर पर प्रत्येक तीन में से एक छात्र को ऑनलाइन या ऑफलाइन उत्पीड़न (Bullying) का सामना करना पड़ता है।
- भारतीय परिदृश्य: राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB, 2022) के आंकड़े भारत में बच्चों और किशोरों के विरुद्ध साइबर अपराधों (जैसे- साइबर स्टॉकिंग, मॉर्फिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न) में तीव्र वृद्धि का संकेत देते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण: अल्बर्ट बंडूरा (Albert Bandura, 1999) का 'नैतिक विघटन का सिद्धांत' (Theory of Moral Disengagement) यह स्पष्ट करता है कि डिजिटल दुनिया की गुमनामी (Anonymity) व्यक्तियों को उनके नैतिक दायित्वों से मुक्त कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप वे बिना किसी अपराधबोध (Guilt) के क्रूर व्यवहार कर बैठते हैं।

शोध अंतराल (Research Gap)

यद्यपि आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) पर कई शोध उपलब्ध हैं, परंतु अधिकांश अध्ययन केवल इसके 'लक्षणों' (Symptoms) और 'दंडात्मक प्रावधानों' (Punitive Solutions - जैसे खाते को अवरुद्ध करना, साइबर कानून, या पुलिस शिकायत) पर ही केंद्रित हैं। वर्तमान साहित्य में एक व्यापक 'शोध अंतराल' (Research Gap) यह है कि यह आभासी उत्पीड़न को केवल एक 'तकनीकी-कानूनी' (Techno-legal) समस्या मानता है, जबकि मूल रूप से यह एक 'शैक्षिक और नैतिक' (Educational and Ethical) समस्या है। अब तक ऐसे अत्यंत सीमित शोध हुए हैं जो डॉ. कलाम के 'मूल्य-आधारित दृष्टिकोण' (Value-based Approach) को एक 'निवारक शैक्षणिक उपकरण' (Preventive Pedagogical Tool) के रूप में स्थापित करते हों। यह शोध पत्र इसी अंतराल की पूर्ति करते हुए 'शांति शिक्षा' (Peace Education) के प्रतिमान (Model) को प्रस्तावित करता है।

शोध के उद्देश्य (Research Objectives)

- आभासी दुनिया (Virtual World) में आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) की प्रकृति और पारंपरिक उत्पीड़न (Traditional Bullying) से इसके मूलभूत अंतर का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- जेन-जेड (Gen Z) के छात्रों में 'डिजिटल सहानुभूति' (Digital Empathy) के ह्रास (Decline) के मनोवैज्ञानिक कारणों का अन्वेषण करना।
- साइबर अपराधों को रोकने में वर्तमान शिक्षा प्रणाली (दंडात्मक उपायों) की सीमाओं (Limitations) का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विजन (तकनीकी-मानवतावाद) के प्रकाश में 'मूल्य-आधारित शांति शिक्षा' (Value-based Peace Education) के एक नवीन प्रतिमान (Model) का प्रस्ताव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

यह अध्ययन प्रकृति में विशुद्ध रूप से गुणात्मक (Qualitative), वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

- आंकड़ों का स्रोत (Data Sources): इस शोध में केवल 'द्वितीयक स्रोतों' (Secondary Data) का उपयोग किया गया है। इसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), UNESCO, और NCRB के नवीनतम प्रतिवेदनों के रणनीतिक विश्लेषण के साथ-साथ, शोधार्थी द्वारा अपने एक अन्य पूर्व अकादमिक शोध (Thesis) के लिए एकत्रित किए गए सर्वेक्षण आंकड़ों का द्वितीयक विश्लेषण (Secondary Analysis) भी सम्मिलित किया गया है।
- सामग्री विश्लेषण (Content Analysis): शोध में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), UNESCO, और NCRB के नवीनतम प्रतिवेदनों (Reports) का रणनीतिक विश्लेषण किया गया है।
- सैद्धांतिक आधार (Theoretical Framework): दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों, NEP 2020 के मसौदे (Draft), और जोहान गाल्टुंग (Johan Galtung) के 'शांति सिद्धांत' (Peace Theory) को सैद्धांतिक ढांचे के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

पारंपरिक उत्पीड़न (Traditional Bullying) बनाम आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying):- एक तुलनात्मक विश्लेषण समस्या की गंभीरता को समझने हेतु पारंपरिक उत्पीड़न और आभासी उत्पीड़न के मध्य विद्यमान संरचनात्मक अंतर को समझना अनिवार्य है।

तालिका 1: पारंपरिक उत्पीड़न (Traditional Bullying) और आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) के मध्य संरचनात्मक अंतर

क्र. सं.	तुलना का आधार (Parameters)	पारंपरिक उत्पीड़न (Traditional Bullying)	आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying)
1.	स्थान और समय (Space & Time)	केवल भौतिक स्थानों (विद्यालय, खेल का मैदान) तक सीमित। एक निश्चित समय अवधि में घटित होती है।	24x7 किसी भी स्थान और समय पर। पीड़ित अपने शयनकक्ष (Bedroom) में भी सुरक्षित नहीं होता।
2.	पहचान (Identity)	पीड़ित सामान्यतः हमलावर को पहचानता है (गुमनामी का अभाव)।	हमलावर प्रायः छद्म पहचान (Fake ID) का उपयोग करता है या गुमनाम (Anonymous) होता है।
3.	दर्शक वर्ग (Audience Size)	दर्शकों की संख्या सीमित होती है (आस-पास उपस्थित कुछ व्यक्ति)।	दर्शकों की संख्या असीमित (Viral) हो सकती है। कुछ ही क्षणों में लाखों लोग देख सकते हैं।

क्र. सं.	तुलना का आधार (Parameters)	पारंपरिक उत्पीड़न (Traditional Bullying)	आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying)
4.	साक्ष्य और फुटप्रिंट (Digital Footprint)	कोई स्थायी रिकॉर्ड नहीं होता, समय के साथ घटना विस्मृत हो जाती है।	डिजिटल फुटप्रिंट सदैव विद्यमान रहता है। सामग्री को हटाने (Delete) के पश्चात भी स्क्रीनशॉट या सर्वर पर साक्ष्य उपलब्ध रहते हैं।
5.	सहानुभूति का स्तर (Empathy Level)	हमलावर पीड़ित के चेहरे के भाव (अश्रु, पीड़ा) देखता है, जिससे कभी-कभी दया उत्पन्न हो सकती है।	हमलावर पीड़ित के भाव नहीं देख पाता (Eye-contact का अभाव), जिससे क्रूरता में वृद्धि होती है (Online Disinhibition Effect)।

(स्रोत: शोधार्थी द्वारा विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर स्व-निर्मित)

डिजिटल सहानुभूति का मनोवैज्ञानिक संकट: 'ऑनलाइन अनियंत्रण' और नैतिक विघटन इसे अल्बर्ट बंडूरा के 'नैतिक विघटन सिद्धांत' (Theory of Moral Disengagement, 1999) के माध्यम से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। आभासी दुनिया में आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) करने वाले छात्र स्वयं को नैतिक उत्तरदायित्वों से किस प्रकार मुक्त करते हैं, इसे निम्नलिखित तालिका द्वारा दर्शाया गया है:

डिजिटल सहानुभूति का मनोवैज्ञानिक संकट:

'ऑनलाइन अनियंत्रण' और नैतिक विघटन (Psychological Crisis of Digital Empathy: Online Disinhibition and Moral Disengagement)

तकनीकी प्रगति ने संचार (Communication) को तीव्र अवश्य किया है, परंतु पटल-मध्यस्थता (Screen-mediation) ने 'संज्ञानात्मक सहानुभूति' (Cognitive Empathy) को गंभीर क्षति पहुँचाई है। प्रत्यक्ष संवाद (Face-to-face communication) में मानव मस्तिष्क की 'प्रतिबिंब तंत्रिकाएं' (Mirror Neurons) सक्रिय होती हैं, जो दूसरे व्यक्ति के नेत्रों और मुख-भावों (Facial Expressions) का अवलोकन कर सहानुभूति उत्पन्न करती हैं। आभासी दुनिया (Virtual World) में इस 'नेत्र-संपर्क' (Eye-contact) के अभाव के कारण युवा क्रूर टिप्पणियां (Cruel Comments) करते समय किसी भी प्रकार के अपराधबोध (Guilt) का अनुभव नहीं करते हैं।

यूनिसेफ (UNICEF) एवं राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) का प्रतिवेदन:

"तकनीकी प्रगति ने जहाँ एक ओर सूचनाओं का विस्तृत संजाल (Web of Information) निर्मित किया है, वहीं युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health) पर इसके अत्यंत गंभीर परिणाम भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। यूनिसेफ (UNICEF, 2022) के वैश्विक प्रतिवेदन (Global

Report) के अनुसार, वर्तमान में प्रत्येक तीन में से एक युवा (लगभग 33%) इंटरनेट पर आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) का शिकार होता है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें 'छूट जाने का भय' (Fear of Missing Out - FOMO) और अवसाद (Depression) में वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त, भारत में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB, 2022) के नवीनतम आंकड़े यह प्रदर्शित करते हैं कि युवाओं और बच्चों के विरुद्ध साइबर अपराधों (जैसे- आभासी पीछा करना / Cyber Stalking और आभासी उत्पीड़न) में विगत कुछ वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि (Unprecedented Growth) दर्ज की गई है, जो डॉ. कलाम द्वारा प्रतिपादित 'नैतिक-तकनीकी शिक्षा' (Ethical-Technical Education) के अभाव को पूर्णतः उजागर करता है।"

मनोवैज्ञानिक जॉन सुलर (John Suler, 2004) इसे "ऑनलाइन अनियंत्रण प्रभाव" (Online Disinhibition Effect) की संज्ञा देते हैं। इंटरनेट की गुमनामी (Anonymity) और अदृश्यता (Invisibility) छात्रों को ऐसा आचरण करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है, जो वे वास्तविक जीवन (Real Life) में कदापि नहीं करेंगे।

तालिका 2: आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) के संदर्भ में अल्बर्ट बंडूरा का 'नैतिक विघटन सिद्धांत'

क्र. सं.	नैतिक विघटन का तंत्र (Mechanism)	आभासी दुनिया (Virtual World) में इसका स्वरूप	युवाओं द्वारा दिया जाने वाला तर्क (उदाहरण स्वरूप)
1.	नैतिक औचित्य (Moral Justification)	आघात पहुँचाने वाले कृत्य को सामाजिक रूप से स्वीकार्य मानना।	"मैंने उनकी आलोचना (Troll) इसलिए की क्योंकि उन्होंने अनुचित विचार प्रस्तुत (Post) किए थे। मैं तो मात्र समाज सुधार का कार्य कर रहा हूँ।"
2.	जिम्मेदारी का विस्थापन (Displacement of Responsibility)	अपने कृत्य का दोष किसी समूह या तकनीक पर आरोपित करना।	"अन्य सभी लोग उन्हें मीम (Meme) के माध्यम से उपहास का पात्र बना रहे थे, अतः मैंने भी उसे केवल साझा (Share) किया।"
3.	परिणामों की उपेक्षा (Distortion of Consequences)	यह मानना कि ऑनलाइन टिप्पणियों (Comments) से किसी को वास्तविक क्षति नहीं पहुँचती।	"यह मात्र इंटरनेट (Internet) है, मैंने उन्हें भौतिक रूप से कोई आघात नहीं पहुँचाया है। यह केवल एक परिहास (Joke) था।"
4.	अमानवीयकरण (Dehumanization)	स्क्रीन के पीछे के व्यक्ति को मनुष्य न मानकर केवल एक 'प्रोफाइल' (Profile) समझना।	"वह कोई वास्तविक मनुष्य नहीं है, अपितु केवल एक फर्जी खाता (Fake Account) या उत्तेजित होने वाला पात्र (Triggered Character) है।"

(स्रोत: अल्बर्ट बंडूरा के सिद्धांत का डिजिटल पेडागोजी के परिप्रेक्ष्य में शोधार्थी द्वारा विश्लेषण)

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) एवं डिजिटल प्रदर्शन संस्कृति (Digital Hustle Culture) का मनोवैज्ञानिक प्रभाव (Socio-Psychological Impact Analysis) :- विभिन्न वैश्विक प्रतिवेदनों (Global Reports) एवं शोधार्थी के एक अन्य शोध-प्रबंध (Thesis) से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis & Findings):आंकड़े तालिका (Secondary Data Table)

तालिका 3: जेन-जेड (Gen-Z) छात्रों पर आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) एवं डिजिटल तनाव (Digital Stress) के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का विवरण (N=150)

क्र.सं.	प्रभाव का आयाम (Impact Dimension)	छात्रों की संख्या (N)	प्रतिशत (%)
1	गंभीर मानसिक तनाव एवं चिंता (Techno-Stress & Anxiety)	68	45.3%
2	अकादमिक ध्यान केंद्रित करने में गिरावट (Cognitive Decline)	42	28.0%
3	डिजिटल अलगाव एवं हीनभावना (Social Isolation & Low Self-Esteem)	25	16.7%
4	'फोमो' (FOMO) एवं ऑनलाइन प्रदर्शन का दबाव (Pressure to Perform Online/Hustle)	15	10.0%
	कुल (Total Sample Size)	150	100%

चित्र : आभासी उत्पीड़न के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का तुलनात्मक चार्ट एवं पाई-चार्ट विश्लेषण (Comparative & Pie Chart Analysis)

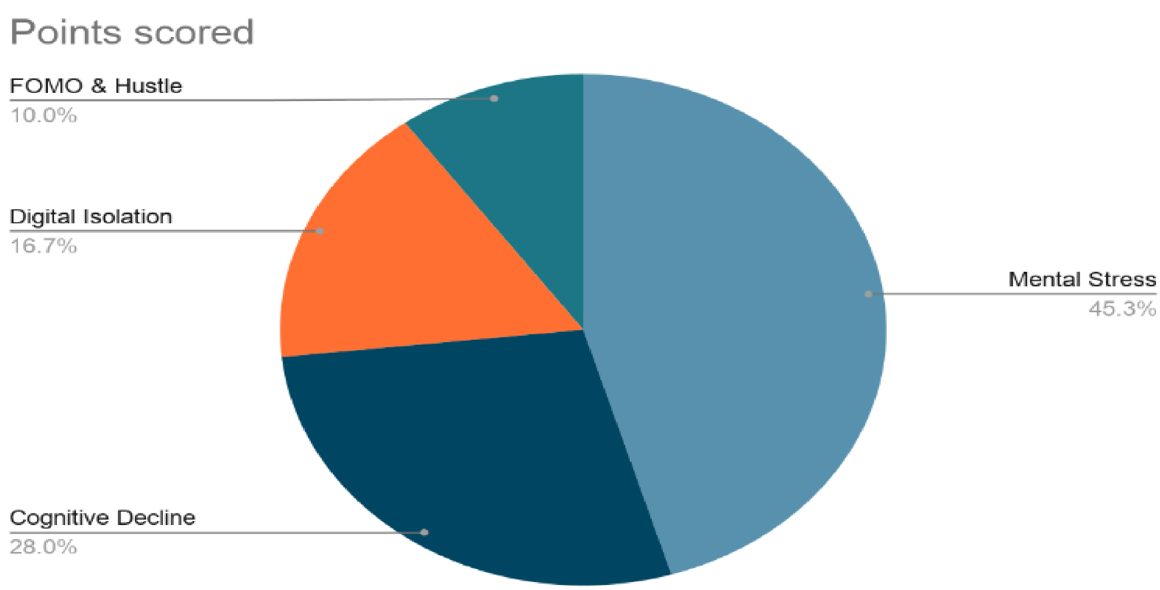

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

उपर्युक्त सैद्धांतिक एवं डेटा विश्लेषण (Data Analysis) यह सिद्ध करता है कि आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) कोई तकनीकी त्रुटि (Technical Glitch) नहीं है, अपितु यह एक गंभीर मनोवैज्ञानिक और नैतिक पतन (Moral Degradation) है, जिसका समाधान केवल सॉफ्टवेयर अद्यतनीकरण (Software Updates) के माध्यम से नहीं किया जा सकता

वर्तमान दंडात्मक नीतियों की विफलता और केस स्टडीज (राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय) (Failure of Punitive Policies & Case Studies)

वर्तमान में शैक्षणिक संस्थान और सरकारें आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) को रोकने के लिए 'दंडात्मक नीतियों' (Punitive Policies) का सहारा लेते हैं, जैसे- खाते (Account) को निलंबित (Suspend) करना, सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम (IT Act 2000 की धारा 67) के अंतर्गत पुलिस शिकायत, या विद्यालय से निष्कासन (Expulsion)। परंतु यह दृष्टिकोण घटना-पश्चात' (Post-facto) प्रकृति का है, जो घटना के घटित होने के पश्चात ही लागू होता है।

निम्नलिखित केस स्टडीज (Case Studies) यह प्रमाणित करती हैं कि जब तक शिक्षा में 'मूल्यों' (Values) का समावेश नहीं होगा, तब तक सर्वाधिक उन्नत और संभ्रांत (Elite) समाज भी इस खतरे से सुरक्षित नहीं है:

1. अंतर्राष्ट्रीय केस स्टडी: द सुल्ली एक्ट (दक्षिण कोरिया, 2019) (International Case Study: The Sulli Act) - दक्षिण कोरिया, जो विश्व में तीव्रतम इंटरनेट और तकनीकी साक्षरता के लिए विख्यात है, वहाँ 2019 में प्रसिद्ध 25 वर्षीय के-पॉप (K-Pop) स्टार 'सुल्ली' (Sulli) ने निरंतर आभासी उत्पीड़न और ऑनलाइन घृणित टिप्पणियों (Hate Comments) के कारण आत्महत्या कर ली। इस घटना के पश्चात वहां की सरकार ने 'सुल्ली एक्ट' (Sulli Act) प्रस्तावित किया ताकि ऑनलाइन गुमनामी (Anonymity) पर नियंत्रण स्थापित किया जा सके। यह केस स्टडी दर्शाती है कि पूर्ण तकनीकी साक्षरता होने के बावजूद यदि 'डिजिटल सहानुभूति' (Digital Empathy) का अभाव है, तो तकनीक मानसिक प्रताड़ना का अस्त्र बन जाती है।
2. राष्ट्रीय केस स्टडीः 'बॉयज़ लॉकर रूम' विवाद (भारत, 2020) (National Case Study: 'Bois Locker Room' Controversy) - मई 2020 में, इंस्टाग्राम पर 'बॉयज़ लॉकर रूम' नामक एक गुप्त संवाद समूह (Chat Group) का भंडाफोड़ हुआ, जिसमें दिल्ली के कुछ अत्यंत संभ्रांत और प्रतिष्ठित विद्यालयों के किशोर छात्र नाबालिग लड़कियों की तस्वीरें साझा (Share) कर रहे थे और उनके प्रति अमानवीय तथा हिंसक टिप्पणियां कर रहे थे। शैक्षिक विश्लेषण (Educational Analysis): यह प्रकरण भारतीय शिक्षा प्रणाली पर एक गंभीर प्रश्नचिह्न उपस्थित करता है। ये छात्र आर्थिक और अकादमिक रूप से संपन्न थे, परंतु उनका 'नैतिक दिक्सूचक' (Moral Compass) पूर्णतः दिशाहीन था। इससे सिद्ध होता है कि भौतिक कक्षाओं की संभ्रांत शिक्षा (Elite Education) डिजिटल दुनिया में सभ्य व्यवहार की गारंटी नहीं है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

समाधान के रूप में: डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का 'तकनीकी-मानवतावादी' दर्शन (Dr. Kalam’s ‘Techno-Humanistic’ Philosophy as a Solution)

भारतीय शिक्षा दर्शन का मूल वाक्य है- "विद्या ददाति विनयम्" (अर्थात सच्ची शिक्षा विनम्रता और संवेदनशीलता प्रदान करती है)। परंतु आज की 'डिजिटल विद्या' संवेदनशीलता (Empathy) के स्थान पर 'आक्रामकता' (Aggression) प्रदान कर रही है। डॉ. कलाम ने इसी सांस्कृतिक पतन की ओर इंगित करते हुए अपनी पुस्तक 'इग्नाइटेड माइंड्स' (अध्याय 4) में स्पष्ट किया था कि जब विज्ञान (Science) को आध्यात्मिकता (Spirituality) और मानवीय मूल्यों (Human Values) का साथ प्राप्त नहीं होता, तो वह समाज का निर्माण करने के स्थान पर विनाश का कारण बनता है। आज के मेटावर्स (Metaverse) और इंस्टाग्राम रील्स (Instagram Reels) के युग में डॉ. कलाम का यह कथन एक अकाट्य सत्य सिद्ध हो रहा है।

उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक संकटों और केस स्टडीज के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि तकनीक को मानवीय चेतना के अधीन रखने के लिए एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार की आवश्यकता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का शिक्षा दर्शन यहाँ सर्वाधिक प्रासंगिक सिद्ध होता है। डॉ. कलाम, जो स्वयं एक महान वैज्ञानिक और 'मिसाइल मैन' थे, तकनीक के प्रबल समर्थक थे, परंतु वे तकनीक को 'मानवता-विहीन' (Devoid of Humanity) छोड़ने के पूर्णतः विरुद्ध थे।

1-मूल्य-आधारित शिक्षा (Value-Based Education): डॉ. कलाम के अनुसार, "शिक्षा का मुख्य उद्देश्य क्षमता निर्माण (Capacity Building) है, लेकिन चरित्र निर्माण (Character Building) के बिना क्षमता एक विध्वंसक शक्ति बन जाती है।" उन्होंने शिक्षा को 'हृदय, मस्तिष्क और हाथ' (Heart, Head, and Hand) के सामंजस्य के रूप में परिभाषित किया। आज की डिजिटल शिक्षा केवल 'मस्तिष्क' (बौद्धिक क्षमता) और 'हाथ' (तकनीकी कौशल) पर कार्य कर रही है, जबकि 'हृदय' (सहानुभूति और मूल्य) को पूर्णतः उपेक्षित कर दिया गया है।

2-डिजिटल दुनिया में 'शांति' का कलाम प्रतिमान (Kalam's Model of Peace in Digital World): यूरोपीय संसद (2007) में दिए गए अपने ऐतिहासिक भाषण में डॉ. कलाम ने वैश्विक शांति का एक सूत्र प्रस्तुत किया था, जिसे आज के 'मेटावर्स' और 'अति-संयोजित' (Hyper-connected) डिजिटल समाज पर सीधे लागू किया जा सकता है। उन्होंने कहा थाः "Where there is righteousness in the heart, there is beauty in the character. When there is beauty in the character, there is harmony in the home. When there is harmony in the home, there is order in the nation. When there is order in the nation, there is peace in the world." (हृदय में सच्चाई होगी, तो चरित्र में सुंदरता होगी... और अंततः विश्व में शांति होगी।)

डिजिटल परिप्रेक्ष्य में, यदि इस 'हृदय की सच्चाई' (Righteousness) को 'डिजिटल नागरिकता' (Digital Citizenship) के रूप में प्रारंभिक शिक्षा से ही छात्रों में पिरो दिया जाए, तो आभासी दुनिया (Virtual World) में स्व-नियमन (Self-regulation) उत्पन्न होगा। डॉ. कलाम

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

का यह विजन साइबर कानूनों के दंडात्मक भय से कहीं अधिक प्रभावशाली है, क्योंकि यह 'बाहरी नियंत्रण' (External Control) के स्थान पर 'आंतरिक चेतना' (Inner Consciousness) पर कार्य करता है

प्रस्तावित 'V-PEACE' प्रतिमान (Model):

डिजिटल दुनिया के लिए एक शैक्षिक रूपरेखा (Educational Framework for Virtual World) आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) और डिजिटल सहानुभूति (Digital Empathy) के संकट को केवल तकनीकी फिल्टर (Technical Filters) या कानूनी चेतावनियों (Legal Warnings) से नहीं रोका जा सकता। इसके लिए एक 'निवारक शैक्षिक प्रतिमान' (Preventive Educational Paradigm) की आवश्यकता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के मूल्यों और आधुनिक साइबर-मनोविज्ञान (Cyber-psychology) को एकीकृत करते हुए, यह शोध पत्र 'V-PEACE' (Virtual Peace) प्रतिमान प्रस्तावित करता है।

- V : Value (मूल्य) - Kalam's Ethical Value System
- P : Peace (शांति) - Mental Peace in Digital Era
- E : Empathy (सहानुभूति) - Digital Empathy & Compassion
- A : Awareness (जागरूकता) - Cyber Safety & Techno-Ethics
- C : Character (चरित्र) - Character Building against Hustle Culture
- E : Education (शिक्षा) - Value-Based Holistic Education

शोधार्थी का सुझाव है कि शैक्षणिक संस्थान इस प्रतिमान को अपने पाठ्यक्रम में एक 'प्रवाह-चित्र' (Flowchart) या 'दिशानिर्देश' (Guideline) के रूप में अंगीकृत करें:

V	**Value (मूल्य)** - Kalam's Ethical Value System
P	**Peace (शांति)** - Mental Peace in Digital Era

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

E	**Empathy (सहानुभूति)** - Digital Empathy & Compassion
A	**Awareness (जागरूकता)** - Cyber Safety & Techno-Ethics
C	**Character (चरित्र)** - Character Building against Hustle Culture
E	**Education (शिक्षा)** - Value-Based Holistic Education

तालिका 4: आभासी दुनिया के लिए प्रस्तावित V-PEACE प्रतिमान का संरचनात्मक विश्लेषण

प्रतिमान के घटक (Components)	विस्तृत अर्थ (Elaboration)	कक्षा/डिजिटल पेडागोजी (Digital Pedagogy) में इसका अनुप्रयोग (Application)
V - Value Integration (मूल्यों का एकीकरण)	डॉ. कलाम के "हृदय की सच्चाई" (Righteousness) के सिद्धांत को तकनीक के साथ संयोजित करना।	छात्रों को यह निर्देशित करना कि जो शब्द वे वास्तविक जीवन में नहीं बोल सकते, उन्हें कीबोर्ड (Keyboard) से भी टाइप (Type) नहीं करना चाहिए।
P - Preventive Policies (निवारक नीतियां)	घटना होने के पश्चात दंड देने (Punitive) के स्थान पर, घटना को घटित होने से रोकना।	विद्यालय स्तर पर 'डिजिटल नैतिकता समिति' (Digital Ethics Committee) का गठन करना, जिसमें छात्र, शिक्षक और साइबर काउंसलर (Cyber Counselor) सम्मिलित हों।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

प्रतिमान के घटक (Components)	विस्तृत अर्थ (Elaboration)	कक्षा/डिजिटल पेडागोजी (Digital Pedagogy) में इसका अनुप्रयोग (Application)
E - Emotional Intelligence (भावनात्मक बुद्धिमत्ता)	स्क्रीन के पीछे बैठे व्यक्ति की भावनाओं को समझने की क्षमता (Cognitive Empathy) विकसित करना।	केस स्टडी और 'भूमिका-निर्वाह' (Role-play) के माध्यम से छात्रों को पीड़ित के दृष्टिकोण (Victim's Perspective) का अनुभव कराना।
A - Accountability & Awareness (जवाबदेही और जागरूकता)	डिजिटल 'फुटप्रिंट' (Digital Footprint) की स्थायी प्रकृति के संदर्भ में जागरूक करना।	छात्रों को यह समझाना कि इंटरनेट पर किया गया एक क्रूर उपहास उनके भविष्य के करियर और मानसिक शांति को किस प्रकार नष्ट कर सकता है।
C - Cyber-Citizenship (डिजिटल नागरिकता)	इंटरनेट को एक वैश्विक समाज मानना और उसके प्रति सम्मानजनक व्यवहार (Netiquette) रखना।	पाठ्यक्रम में 'डिजिटल नागरिकता' (Digital Citizenship) को एक अनिवार्य (Non-credit) विषय के रूप में सम्मिलित करना।
E - Ethical Tech-Use (नैतिक तकनीकी उपयोग)	तकनीक का उपयोग 'सृजन' (Creation) के लिए करना, 'विनाश' या 'उत्पीड़न' (Harassment) के लिए नहीं।	STEM शिक्षा के साथ 'तकनीकी नैतिकता' (Tech-Ethics) को अनिवार्य रूप से पढ़ाना (डॉ. कलाम का विजन)।

(स्रोत: डॉ. कलाम के शैक्षिक दर्शन और जोहान गाल्टुंग के शांति सिद्धांत के आधार पर शोधार्थी द्वारा विकसित मौलिक प्रतिमान)

डॉ. कलाम के विजन को डिजिटल दुनिया में लागू करने के लिए, उनके 'PURA' (Providing Urban Amenities to Rural Areas) प्रतिमान को 'Digital PURA' के रूप में पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। आज ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों के छात्रों तक सुलभ इंटरनेट के माध्यम से 'डिजिटल सुविधाएं' तो पहुँच गई हैं, परंतु 'डिजिटल संस्कार' (Digital Values) नहीं पहुँचे हैं। अतः V-PEACE प्रतिमान वास्तव में डॉ. कलाम के PURA का वह वैचारिक अद्यतनीकरण (Ideological Update) है, जो छात्रों को केवल 'संयोजकता' (Connectivity) नहीं, अपितु 'सहानुभूतिपूर्ण संयोजकता' (Empathetic Connectivity) प्रदान करेगा।

Value (मूल्य)	→	**P**eace (शांति)	→	**E**mpathy (सहानुभूति)

GYANBODH
An International Multidisciplinary
Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

↓ Drives Digital Harmony/Empathy ↓				
Awareness (जागरूकता)	→	**C**haracter (चरित्र)	→	**E**ducation (शिक्षा)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और शांति शिक्षा का एकीकरण (Integration of Peace Education and NEP 2020)

यह शोध पत्र दृढ़तापूर्वक तर्क प्रस्तुत करता है कि V-PEACE प्रतिमान और डॉ. कलाम का विजन कोई यूटोपियन (काल्पनिक) विचार नहीं है, अपितु इसे भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में परोक्ष रूप से स्वीकार किया गया है।

1. नैतिक तर्क और सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (Socio-Emotional Learning - SEL): NEP 2020 का खंड 4.23 स्पष्ट रूप से "सामाजिक-भावनात्मक अधिगम" और "नैतिक तर्क" (Ethical Reasoning) पर बल देता है। डिजिटल युग में, यह SEL ही वह उपकरण है जो आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) के विरुद्ध एक मनोवैज्ञानिक ढाल (Psychological Shield) के रूप में कार्य कर सकता है।
2. ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा (खंड 24): यह नीति यह स्वीकार करती है कि डिजिटल शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और 'डिजिटल डिवाइड' (Digital Divide) को संबोधित करना अत्यंत आवश्यक है। डॉ. कलाम का विजन NEP 2020 के इस खंड को एक दार्शनिक आत्मा (Philosophical Soul) प्रदान करता है, कि "स्क्रीन टाइम" (Screen Time) से अधिक "स्क्रीन एथिक्स" (Screen Ethics) महत्वपूर्ण है।

NEP 2020 और मूल्य-आधारित शिक्षा का अंतर्संबंध (Link between NEP 2020 and Value-based Education):

आभासी उत्पीड़न के समाधान हेतु प्रस्तुत 'V-PEACE प्रतिमान' पूर्णतः भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के विजन के अनुरूप है। NEP 2020 के अध्याय 4 में स्पष्ट रूप से 'नैतिक, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों (Ethical and Human Values)' के विकास पर बल दिया गया है। डॉ. कलाम का विजन भी यही था कि तकनीक को कभी भी मानवीय संवेदनाओं (Empathy) से सर्वोपरि नहीं रखा जाना चाहिए। यदि

जेन-जेड (Gen-Z) को केवल 'कोडिंग' (Coding) का ज्ञान प्रदान किया जाएगा और 'चरित्र-निर्माण' (Character-building) नहीं किया जाएगा, तो डिजिटल दुनिया में मानसिक शांति स्थापित करना सर्वथा असंभव होगा।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

इस विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए निम्नलिखित निहितार्थ (Implications) प्रस्तावित हैं:

- शिक्षकों का साइबर-मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण (Cyber-Psychological Training of Teachers): शिक्षकों को केवल स्मार्टबोर्ड (Smartboard) का संचालन ही नहीं, अपितु छात्रों के 'तकनीकी-तनाव' (Techno-stress) और 'डिजिटल व्यवहार' (Digital Behavior) को समझने का प्रशिक्षण (Cyber-Psychology Training) भी प्रदान किया जाना चाहिए।
- सहानुभूति आधारित मूल्यांकन (Empathy-based Assessment): छात्रों का मूल्यांकन केवल उनके ग्रेड्स (Grades) के आधार पर नहीं, अपितु उनके आभासी व्यवहार (Virtual Behavior) और सहपाठियों के साथ ऑनलाइन संवाद (Peer-to-peer Online Communication) के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

आलोचनात्मक मूल्यांकन:

क्या केवल 'शांति शिक्षा' पर्याप्त है? (Critical Evaluation: Is 'Peace Education' Enough?) यद्यपि V-PEACE प्रतिमान और डॉ. कलाम का मूल्य-आधारित दृष्टिकोण आभासी उत्पीड़न का एक सुदृढ़ दार्शनिक समाधान प्रस्तुत करते हैं, परंतु इसका एक व्यावहारिक पक्ष भी है जिसकी आलोचनात्मक समीक्षा (Critical Review) आवश्यक है। क्या केवल शैक्षणिक संस्थानों में 'शांति शिक्षा' लागू कर देने मात्र से साइबर अपराध रुक जाएंगे? इसका उत्तर है- नहीं। जब तक छात्रों का 'प्रथम विद्यालय' अर्थात उनका घर और उनके माता-पिता 'डिजिटल साक्षरता' (Parental Digital Literacy) से संपन्न नहीं होंगे, तब तक विद्यालय स्तर पर किए गए प्रयास अपूर्ण ही रहेंगे। 'शांति शिक्षा' को एक त्रिकोणीय साझेदारी (Triangular Partnership) - छात्र, शिक्षक और अभिभावक - के रूप में ही सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया जा सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

इक्कीसवीं सदी की तकनीकी प्रगति ने मानव जाति को एक अभूतपूर्व चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहाँ हमारे पास संवाद के लिए सर्वाधिक तीव्र उपकरण (5G/AI) तो उपलब्ध हैं, परंतु संवाद में सहानुभूति (Empathy) का नितांत अभाव है। आभासी उत्पीड़न (Cyberbullying) केवल एक तकनीकी अपराध (Cyber-crime) नहीं है; यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हमारी शिक्षा प्रणाली बौद्धिक रूप से तो विकसित हो रही है, परंतु नैतिक रूप से विघटित (Morally Disengaged) हो रही है। दंडात्मक नीतियां और साइबर कानून केवल तात्कालिक रोकथाम ही कर सकते हैं, वे युवाओं की मानसिक क्रूरता (Online Disinhibition) का स्थायी समाधान नहीं हैं।*डॉ. कलाम के नव-यथार्थवादी (Neo-Realistic) दृष्टिकोण को अंगीकृत करते हुए इस शोध को उनके इस कालजयी विचार के साथ समाप्त किया जा सकता है: जब हृदय में नेकी होती है, तो चरित्र में*

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

सुंदरता आती है। जब चरित्र में सुंदरता होती है, तो घर में सद्भाव होता है। जब घर में सद्भाव होता है, तो राष्ट्र में व्यवस्था होती है, और जब राष्ट्र में व्यवस्था होती है, तो विश्व (और डिजिटल दुनिया) में शांति होती है।"

इस गंभीर संकट का एकमात्र स्थायी समाधान डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के 'तकनीकी-मानवतावादी' (Techno-humanistic) दृष्टिकोण में निहित है। जब तक शिक्षा में 'हृदय की सच्चाई' और 'मूल्य-आधारित शांति शिक्षा' को सम्मिलित नहीं किया जाएगा, तब तक आभासी दुनिया युवाओं के लिए एक युद्ध का मैदान बनी रहेगी। अतः, भविष्य की शिक्षा का मुख्य ध्येय केवल उन्नत तकनीक (Advanced Tech) का निर्माण करना नहीं, अपितु उस तकनीक का उपयोग करने वाले एक 'संवेदनशील मनुष्य' का निर्माण करना होना चाहिए। अंततः, एल्गोरिदम (Algorithms) हमें कभी सहानुभूति (Empathy) नहीं सिखा सकते; यह कार्य केवल एक मूल्य-आधारित और मानव-केंद्रित (Human-centric) शिक्षा प्रणाली ही कर **सकती है।**

शोध की सीमाएं और भावी अनुसंधान (Limitations and Future Scope)

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources), दार्शनिक सिद्धांतों और गुणात्मक विश्लेषण (Qualitative Analysis) पर आधारित है। यह इस अध्ययन की एक सीमा (Limitation) है कि इसमें प्राथमिक मात्रात्मक डेटा (Primary Quantitative Data) का अभाव है। भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए यह सुझाव है कि वे प्रस्तावित 'V-PEACE' प्रतिमान की प्रभावशीलता का मापन करने हेतु विभिन्न विद्यालयों में 'प्रायोगिक शोध' (Experimental Research) कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इस विषय पर भी प्राथमिक सर्वेक्षण (Primary Survey) किया जा सकता है कि डॉ. कलाम के शैक्षिक विचारों को वर्तमान स्कूली पाठ्यक्रम में किस सीमा तक व्यावहारिक रूप में सम्मिलित किया गया है।

संदर्भ सूची (References / Bibliography)

1. Bandura, A. (1999). Moral disengagement in the perpetration of inhumanities. Personality and Social Psychology Review, 3(3), 193-209.
2. Galtung, J. (1969). Violence, peace, and peace research. Journal of Peace Research, 6(3), 167-191.
3. Kalam, A. P. J. A. (2002). Ignited Minds: Unleashing the Power Within India. Penguin Books India.
4. Kalam, A. P. J. A., & Rajan, Y. S. (1998). India 2020: A Vision for the New Millennium. Penguin Books India.
5. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy (NEP) 2020.

6. National Crime Records Bureau (NCRB). (2022). Crime in India 2022: Statistics on Cyber Crimes against Children. Ministry of Home Affairs, Government of India.
7. Suler, J. (2004). The online disinhibition effect. Cyberpsychology & Behavior, 7(3), 321-326.
8. UNESCO. (2020). Behind the numbers: Ending school violence and bullying. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
9. World Health Organization (WHO). (2022). Adolescent mental health: Time to act. WHO Reports.
10. निमरा. (2025-Dr.Apj Abdul Kalam के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता].अप्रकाशित शोध-प्रबंध (Unpublished Thesis), शिक्षा विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय।
11. International Telecommunication Union (ITU). (2023). Measuring digital development: Facts and Figures 2023. Geneva: ITU.
12. UNICEF. (2022). Cyberbullying: What is it and how to stop it. United Nations Children's Fund.